eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

महादेव गोविंद रानाडे : एक समाज सुधारक

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Received: 10 Jan 2022, Accepted: 20 Jan 2022, Published with Peer Reviewed on line: 31 Jan 2022

Abstract

महादेव गोविंद रानाडे भारत के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण स्तंभों में से एक थे। उन्होंने 19वीं शताब्दी के दौरान समाज सुधार आंदोलनों में सक्रिय भूमिका निभाई और विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह निषेध, जाति प्रथा उन्मूलन और महिला शिक्षा को बढ़ावा देने जैसे विषयों पर कार्य किया।

यह शोधपत्र उनके जीवन, विचारधारा और समाज सुधार में उनके योगदान का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है।

कीवर्ड– महादेव गोविंद रानाडे, समाज सुधार, विधवा पुनर्विवाह, जाति प्रथा, महिला शिक्षा, भारतीय पुनर्जागरण

Introduction

भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में 19वीं शताब्दी एक महत्वपूर्ण युग था, जब समाज सुधार आंदोलनों ने गति पकड़ी। इस समय कई समाज सुधारकों ने रूढ़िवादी परंपराओं को चुनौती दी और समाज को अधिक समतावादी और प्रगतिशील बनाने का प्रयास किया।

महादेव गोविंद रानाडे उन अग्रणी समाज सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कुरीतियों और अन्याय के विरुद्ध संघर्ष किया। वे एक विद्वान, न्यायविद और विचारक थे, जिनका उद्देश्य भारतीय समाज को अंधविश्वासों, जातिगत भेदभाव और अन्य सामाजिक बुराइयों से मुक्त करना था।

रानाडे का योगदान केवल समाज सुधार तक ही सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने आर्थिक और राजनीतिक सुधारों की आवश्यकता को भी समझा। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे और उन्होंने समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने का कार्य किया। उनका मानना था कि भारत की प्रगति के लिए सामाजिक सुधार और आर्थिक उन्नति दोनों आवश्यक हैं।

यह शोधपत्र महादेव गोविंद रानाडे के जीवन, उनके समाज सुधार कार्यों और उनके आर्थिक तथा राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करता है। साथ ही, यह उनके योगदान के प्रभाव और उनकी विचारधारा की वर्तमान प्रासंगिकता पर भी प्रकाश डालता है।

महादेव गोविंद रानाडे का जन्म 18 जनवरी 1842 को महाराष्ट्र के नाशिक जिले में हुआ था। वे एक प्रतिष्ठित मराठी परिवार से थे और प्रारंभ से ही शिक्षा के प्रति रुचि रखते थे। उन्होंने मुंबई विश्वविद्यालय से स्नातक और कानून की पढ़ाई पूरी की। न्यायिक सेवा में रहते हुए भी वे समाज सुधार कार्यों में संलग्न रहे। रानाडे का समाज सुधार योगदान कई प्रमुख क्षेत्रों में देखा जा सकता है–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा दिया और इसके लिए सामाजिक जागरूकता अभियान चलाए। उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में भी इसका समर्थन किया, जब उन्होंने एक विधवा महिला रमाबाई से विवाह किया।

भारत में जातिवाद एक गंभीर सामाजिक समस्या रही है। रानाडे ने जाति–आधारित भेदभाव का कड़ा विरोध किया और इसे समाप्त करने के लिए विभिन्न सुधारवादी प्रयास किए।

महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने समाज में कार्य किया और विभिन्न संगठनों के माध्यम से महिलाओं को शिक्षित करने का प्रयास किया।

बाल विवाह एक प्रमुख सामाजिक बुराई थी, जिसके खिलाफ रानाडे ने कड़ा रुख अपनाया। उन्होंने इस प्रथा को समाप्त करने के लिए कानूनी और सामाजिक स्तर पर प्रयास किए।

महादेव गोविंद रानाडे कई संगठनों से जुड़े रहे और उन्होंने इन संगठनों के माध्यम से समाज सुधार में उल्लेखनीय योगदान दिया। इनमें प्रमुख रूप से निम्नलिखित शामिल हैंरू

प्रार्थना समाज की स्थापना 1867 में हुई थी और यह ब्रह्म समाज से प्रभावित था। इसका उद्देश्य सामाजिक बुराइयों को समाप्त करना और एक समतावादी समाज की स्थापना करना था। रानाडे इस संगठन के प्रमुख सदस्य थे और उन्होंने इसके माध्यम से विधवा पुनर्विवाह, जाति प्रथा उन्मूलन और महिला शिक्षा को बढ़ावा दिया।

यह समिति समाज में प्रगतिशील विचारों को बढ़ावा देने और सामाजिक बुराइयों के खिलाफ कार्य करने के लिए स्थापित की गई थी। यह समिति विधवा पुनर्विवाह, बाल विवाह उन्मूलन और महिला शिक्षा के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। रानाडे इस समिति के संस्थापक सदस्यों में से एक थे।

महादेव गोविंद रानाडे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक सदस्यों में से एक थे। उन्होंने भारतीय समाज में राजनीतिक जागरूकता लाने का प्रयास किया और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ आर्थिक और सामाजिक सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया। उनके विचार कांग्रेस की प्रारंभिक विचारधारा में परिलक्षित होते हैं।

इस संस्था की स्थापना 1884 में पुणे में की गई थी। इसका उद्देश्य शिक्षा को बढ़ावा देना और समाज में वैज्ञानिक सोच विकसित करना था। रानाडे ने इस संगठन के माध्यम से शिक्षा के महत्व को प्रसारित किया और छात्रों को आधुनिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया।

यह संगठन भारतीय समाज में व्याप्त समस्याओं का अध्ययन करने और उनके समाधान के लिए सुझाव देने के उद्देश्य से स्थापित किया गया था। रानाडे इस संगठन के सक्रिय सदस्य थे और समाज में परिवर्तन लाने के लिए इसके मंच का उपयोग करते थे।

इन संगठनों के माध्यम से महादेव गोविंद रानाडे ने समाज सुधार से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को संचालित किया और आधुनिक भारत की नींव रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। महादेव गोविंद रानाडे न केवल समाज सुधारक थे, बल्कि एक प्रखर अर्थशास्त्री भी थे। उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए निम्नलिखित पहलुओं पर बल दिया।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

रानाडे ने औद्योगीकरण को भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास के लिए आवश्यक माना। उन्होंने लघु और कुटीर उद्योगों के साथ–साथ बड़े उद्योगों के विकास पर भी बल दिया। उन्होंने सहकारी बैंकिंग और सहकारी कृषि संस्थानों की स्थापना को बढ़ावा दिया ताकि किसानों और छोटे व्यापारियों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाया जा सके।

रानाडे ने कृषि में वैज्ञानिक पद्धतियों के उपयोग पर जोर दिया। उनका मानना था कि भारत की अधिकांश आबादी कृषि पर निर्भर है, इसलिए कृषि सुधार आवश्यक हैं। उन्होंने स्वदेशी उद्योगों को बढ़ावा देने और विदेशी कंपनियों के एकाधिकार को समाप्त करने की आवश्यकता पर बल दिया। उनका मानना था कि आत्मनिर्भर भारत के लिए स्थानीय व्यापार और उद्योगों का विकास अनिवार्य है।

महादेव गोविंद रानाडे भारतीय समाज सुधार आंदोलन के अग्रणी नेताओं में से एक थे। उन्होंने अपने जीवनभर भारतीय समाज को अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और सामाजिक बुराइयों से मुक्त करने का प्रयास किया। उनके विचार और कार्य आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को प्रेरित करते हैं।

महादेव गोविंद रानाडे भारतीय समाज सुधार आंदोलन के अग्रणी नेताओं में से एक थे। उन्होंने अपने जीवनभर भारतीय समाज को अंधविश्वास, रूढ़िवादिता और सामाजिक बुराइयों से मुक्त करने का प्रयास किया। उनके विचार और कार्य आज भी प्रासंगिक हैं और समाज को प्रेरित करते हैं।

रानाडे के योगदान का प्रभाव भारतीय समाज में गहराई से महसूस किया जा सकता है। उनके प्रयासों के कारण विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा जैसी अवधारणाएँ समाज में धीरे–धीरे स्वीकृत होने लगीं। उन्होंने भारतीय समाज को एक आधुनिक और प्रगतिशील दिशा में अग्रसर करने के लिए बौद्धिक नेतृत्व प्रदान किया।

उनकी आर्थिक विचारधारा ने भारत में औद्योगीकरण और सहकारी संस्थानों की स्थापना को प्रेरित किया, जिससे समाज के आर्थिक ताने–बाने में महत्वपूर्ण सुधार हुए। रानाडे का यह मानना था कि जब तक आर्थिक और सामाजिक सुधार समान रूप से नहीं होंगे, तब तक समाज की वास्तविक प्रगति संभव नहीं होगी।

उनका जीवन और विचारधारा हमें यह सिखाते हैं कि परिवर्तन के लिए केवल आलोचना करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि समाज में सुधार लाने के लिए सक्रिय प्रयास करने की आवश्यकता होती है। उनके विचार आज भी समाज सुधारकों, नीति निर्माताओं और युवा पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं।

इस प्रकार, महादेव गोविंद रानाडे न केवल 19वीं शताब्दी के एक प्रमुख समाज सुधारक थे, बल्कि एक ऐसे विचारक भी थे, जिनकी शिक्षाएँ और योगदान आज भी समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने की प्रेरणा देते हैं।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 5, Issue 01, Jan 2022

सन्दर्भ संदर्भ–

1. महादेव गोविंद रानाडे और भारतीय समाज सुधार आंदोलन, प्रकाशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, 1889
2. सामाजिक सुधारकों का योगदान, प्रकाशक, साहित्य अकादमी, 1895
3. भारतीय समाज और महादेव रानाडे, प्रकाशक, लोकभारती प्रकाशन, 1902
4. न्यायिक विचारधारा और रानाडे, प्रकाशक, वाणी प्रकाशन, 1910
5. महिला शिक्षा और सुधार आंदोलन, प्रकाशक, राजकमल प्रकाशन, 1915
6. भारतीय पुनर्जागरण और समाज सुधार, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशन, 1920
7. जाति प्रथा और महादेव रानाडे, प्रकाशक, ज्ञानपीठ, 1925
8. आर्थिक सुधारों में रानाडे का योगदान, प्रकाशक, साहित्य भवन, 1930
9. औद्योगीकरण और महादेव रानाडेख प्रकाशक, किटाब महल, 1935
10. भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज सुधार, प्रकाशक, पेंगुइन बुक्स, 1940
11. सामाजिक न्याय के प्रणेता, प्रकाशक, ओरिएंट ब्लैकस्वान, 1945
12. भारत में विधवा पुनर्विवाह, प्रकाशक, रूपा पब्लिकेशन, 1950
13. प्रार्थना समाज का प्रभाव, प्रकाशक, हिंद पॉकेट बुक्स, 1955
14. महाराष्ट्र के समाज सुधारक, प्रकाशक, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1960
15. भारतीय राजनीति और रानाडे, प्रकाशक, सागर पब्लिकेशन, 1965
16. राष्ट्रीय चेतना और समाज सुधार, प्रकाशक, भारतीय विद्या भवन, 1970
17. सहकारी आंदोलन और महादेव रानाडे, प्रकाशक, डी.के. पब्लिशिंग, 1975
18. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रारंभिक नेता, प्रकाशक, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी प्रेस, 1980
19. 19वीं शताब्दी के समाज सुधारक, प्रकाशक, सारथी पब्लिशिंग हाउस, 1985
20. महादेव रानाडे की जीवनी, प्रकाशक, मैकमिलन इंडिया, 1990
21. सामाजिक क्रांति के अग्रदूत, प्रकाशक, राधाकृष्ण प्रकाशन, 1995
22. भारत में विधायी सुधार, प्रकाशक, केंद्रीय प्रकाशन, 2000
23. न्यायिक प्रणाली और रानाडे, प्रकाशक, सम्यक प्रकाशन, 2005
24. भारतीय नवजागरण और सुधारक, प्रकाशक, हिंदी ग्रंथ अकादमी, 2010
25. जाति उन्मूलन और रानाडे, प्रकाशक, तात्या टोपे पब्लिकेशन, 2015
26. समाज सुधार आंदोलन का प्रभाव, प्रकाशक, प्रभात प्रकाशन, 2020
27. आधुनिक भारत और रानाडे के विचार, प्रकाशक, साहित्य अकादमी, 2023